डांग जिला प्रशासन द्वारा आहवा में आयोजित ‘‘डांग दरबार–२०१७’’ समारोह (9 मार्च, 2017)

- डांग जिला प्रशासन द्वारा प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी ‘‘ डांग दरबार’’ का आयोजन किया गया है। इस जिले के हमारे आदिवासी परिवार उत्साह और उमंग के साथ डांग दरबार समारोह का इंतजार करते हैं। इस जिले का इतिहास बहुत पुराना है, जिसमें शौर्य, साहस और बलिदानों की कई गाथाएँ दर्ज हैं। इस जिले ने हमारी प्राचीन संस्कृति की अनेक परम्पराओं को सुरक्षित रखा है, जो हमारे गौरवशाली अतीत को उजागर करती हैं। यहाँ के निवासियों की अलग प्रकार की जीवनशैली है तथा प्राकृतिक संसाधन से लबालब यहाँ के कई स्थल अब पर्यटकों के लिए मशहूर हो चुके हैं, जिसमें गिरी मथक, सापुतारा, गीना धोध, घने जंगल में शबरी धाम इत्यादि मुख्य स्थल हैं। यहाँ के घने जंगल देश और विश्व के सैलानियों को आकर्षित करते रहे हैं।
- डांग जिले के तत्कालीन राजाओं और प्रजा ने मातृभूमि के प्रति असीम प्रेम होने के

कारण ब्रिटिश हुकूमत को कड़ी चुनौती दी थी तथा इस प्रदेश पर अंग्रेजों को विजय प्राप्त नहीं करने दी थी। अंत में हार कर ब्रिटिशरों को इस क्षेत्र को Foreign Territory मानना पड़ा था जिसका इतिहास साक्षी है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में भी डांग की संस्कृति का जिक्र है। उस समय में डांग क्षेत्र दंडकारण्य क्षेत्र के नाम से जाना जाता था, जिसका उल्लेख हमें रामायण में भी मिलता है। देश में अंग्रेज आए उस समय डांग क्षेत्र पर पाँच भील राजाओं का शासन हुआ करता था। यह क्षेत्र दुर्गम पहाड़ी प्रदेश होने के कारण अंग्रेज इस पर विजय प्राप्त नहीं कर पाये थे। 1842 में डांग के राजाओं और नायकों के साथ उन्होंने वन पट्टे का समझौता किया था और इसके बदले में डांगी राजाओं को वार्षिक रकम दी जाती थी। क्रमशः यह समझौता एक सम्मानजनक प्रथा के रूप में माने जाने लगा था। विदेशी राजनैतिक प्रतिनिधियों के द्वारा डांग दरबार में राजाओं का सम्मान किया जाता था और उन्हें रकम भी दी जाती थी।तब से यह डांग दरबार आयोजित

होता चला आ रहा है। आज भी इस परंपरा का डांग जिला प्रशासन द्वारा निर्वाह किया जाता है। इस उपलक्ष्य में डांग दरबार एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है और प्रतिवर्ष हमें अविस्मरणीय आतिथ्य का स्मरण होता रहता है।

- कुदरती संपदा से समृद्ध इस क्षेत्र में वनवासी लोग प्रकृति की गोद में बसे हुए हैं और उसके साथ घुल–मिल गए हैं। मुझे खुशी है कि आज की इस भाग दौड़ वाली तनावभरी जीवनशैली के दौर में भी डांग क्षेत्र के लोग अपनी अक्षुण्ण परंपराओं के सहारे जीवन व्यतीत करते हैं। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य के मद्देनज़र आर्थिक परिप्रेक्ष्य का प्रभाव ग्रामीण आंचलों तक पहुँच चुका है। डांग जिले के वनवासी अपनी मेहनत तथा आत्मबल के साथ विकास के रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं। इस जिले के लोगों में जागृति आ चुकी है, जिससे लोग इस जिले को सर्वांगीण विकास के नये आयामों तक पहुँचाने में अपना सक्रिय योगदान दे रहे हैं।
- मुझे बताया गया है कि जिले में फसलों की पैदावार में भी बढ़ोत्तरी हुई है। धान, नागली,

तूवर, गेहूँ, ज्वार जैसी अन्य फसलों के उत्पादन में भी बढ़ोत्तरी दर्ज हुई है। इसके अलावा, डेयरी, पशुपालन एवं गृह उद्योग के विकास होने के कारण आर्थिक स्वावलंबन का लाभ भी लोगों को मिला है। सरकार द्वारा वनबंधु विकास योजना के अंतर्गत वनवासी बालकों में शिक्षा का विस्तार और प्रभाव भी बढ़ा है।

- मैं आशा करता हूँ कि इस क्षेत्र की उन्नति के लिए यहाँ के आदरणीय डांगी राजा, स्थानीय लोकप्रतिनिधि एवं समाज के अग्रणी इस जिले की कला, संस्कृति और परंपराओं का रक्षण करते हुए अपने क्षेत्र के विकास में समय के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ने का संकल्प करेंगे। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि इस वर्ष डांगी राजवी समेत किरली, शिवबरा, चिंचली, अवचार, और्वी, पिपलाई डेयरी, झोयावन, झरी, खारगडी और वीर बारी गांवों के नव नायकों और राजवीयों तथा उनके भाईबंधों को करीब १६ लाख की बड़ी रकम वार्षिक पेन्शन के रूप में दी जाएगी।

- मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि राज्य सरकार इस जिले की उन्नति के लिए वनबंधु विकास योजना लागू कर रही है। मैं उम्मीद करता हूँ कि सरकार के इन प्रयासों का लाभ वनवासी परिवारों को उनकी दहलीज़ पर ही प्राप्त हो, ऐसे प्रयत्नों में हम सभी को भागीदार बनना पड़ेगा। तभी उनके उत्कर्ष की गतिविधियों को और तेज बनाया जा सकेगा।
- मैं यहाँ उपस्थित महानुभावों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।